AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थी, अभिभावक एवं समाज की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुभाष चन्द्र पाल
शोधार्थी
आजीवन शिक्षा प्रसार एवं
समाज कार्य अध्ययन शाला
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

यह एक सर्वमान्य विचारधारा है कि संपूर्णता व दिव्यदर्शन से भरपूर और राष्ट्र के उत्थान में समर्पित ऐसी शिक्षा नीति जिसमें भविष्य उन्मुखी के गुणों से परिपूर्ण है। प्रत्येक देश के चर्तुमुखी विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि शिक्षा ही देश के आर्थिक व शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक एवं समन्वयवादी आदि दृष्टिकोण और विकास में सहायक हो सकती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हाल में ही भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 को मूर्त रूप दिया है। इस नीति की अध्यक्षता डॉ. कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में मूर्त रूप देने का कार्य किया गया है जिसमें विभिन्न शिक्षाविदो के परामर्श एवं सुझावों पर आधारित है। उपरोक्त शोधपत्र में नई शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थी एवं अभिभावक एवं समाज का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (सन् 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्रीमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, ये भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), पर बदलते समय की मांग के अनुसार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) स्थान लेने में सक्षम है। यह नीति व्यापक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। इसमें आधारभूत शिक्षा की विधिवत रूपरेखा तैयार की गई है और उच्च शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीण शिक्षा व नगरीय शिक्षा और व्यवसायिक एवं कौशल परक शिक्षा प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। यह शिक्षा नीति (2020) विषय की एवं ग्रुप मर्यादा से हटकर दूसरे ग्रुप के विषय देने की भी बात कही गई जिसमें शिक्षार्थीयों कोलोब्रेटीव शिक्षा अध्ययन करने का एक संयोजन प्राप्त होगा।

मुख्य शब्द

शिक्षानीति, विद्यार्थी, अभिभावक, समाज, संस्कृति.

प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति के साथ–साथ उसके नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिये शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण आधार माना गया है। देश की स्वतंत्रता से लेकर अब तक आधुनिक समाज में भारत के लोगों के निर्माण में भारतीय नई शिक्षा नीति महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

आधुनिक समय की आवश्यकता के अनुरूप विद्यार्थी एवं अभिभावक अपेक्षित समय के बदलाव में सहजता से परिवर्तित करने सफल हो सके। इस लिए केन्द्र सरकार इस पवित्र नीति को लेकर आयी है और इसके गर्भ में हमारे

देश का भविष्य छिपा है जिसमें विद्यार्थियों में कौशल परक शिक्षा पर बल दिया गया और समाज उपयोगी प्रणाली के रूप कार्य करेगी। 21वीं सदी बुद्धिवाद की सदी है इसमें समाज में विभिन्न जटिलताओं से होकर लोग अपनी समस्या का समाधान करने पड़ेगें।

एक अनुमान के अनुसार कि सन् 2030–2032 तक भारत दस ट्रिलियन डॉलर की अनुमानित जी.डी.पी. के साथ दुनिया तीसरा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा, तो यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि दस ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था भारत के प्राकृतिक संसाधनों से संचालित नही की जा सकती है। इनको संचालित करने के लिये ज्ञान एवं भौतिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ेगी और इस आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए भारतीय शिक्षा क्षेत्र के विकास को बढावा देने के लिए, वर्तमान सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शुरू करने का निर्णय लिया है।

भारत में मौजूदा शिक्षा नीति आधुनिक समय में तकनीक के साथ मेल–जोल स्थापित नहीं कर पा रही थी और इसके साथ–साथ प्राकृतिक आपदा के समय भी भारतीय छात्र व छात्राओं को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा था। विज्ञान और तकनीकी के अभाव में कोविड़ के समय में भारतीय नवयुवकों को भारी नुकसान झेलना पड़ा था, क्योंकि ना तो विद्यार्थियों को और ना तो ही शिक्षकों को तकनीकी के माध्यम से पढ़ाने का अनुभव था, इसलिए अनायास कोविड़ आने से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भारी ठेस लगी। हालांकि केन्द्र सरकार पिछले 5 वर्षों से लगातार नई शिक्षा नीति पर कार्य कर रही है और सरकार ने आगामी समय की जरूरतों को पूरा करने और अपनी दिव्यदर्शी सोच का प्रमाण देते हुये नए समय के लिए ये नई शिक्षा नीति हमारे राष्ट्र में लागू की गयी है।

यह शिक्षा नीति का एक मुख्य लक्ष्य है कि निरक्षर और शिक्षित के बीच की खाई को कम करके उसे भरा जाय क्योंकि हम देखते है कि पिछली सरकारों और विश्व बैंक जैसी अन्य विदेशी संस्थाओं के सहयोग से भारत ने साक्षरता दर में तो विकास किया है जो कि वर्तमान समय में साक्षरता दर 80 प्रतिशत से अधिक है। वास्तविकता यह है कि शिक्षा की दर में भारी गिरावट है जिससे शिक्षित लोगों को भीड़ से भारी संख्या में बेरोजगारी देखने को मिल रही है। इसमें सरकार का भी रोल है कि उसकी ढुल–मुल नीति के कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव देखने को मिला है।

आज समाज का दृष्टिकोण भी स्वार्थी सा नजर आ रहा है और विद्यार्थीयों को भी नैतिकता और मूल्य को आत्मसात करना पड़ेगा तब ही राष्ट्र का विकास सम्भव है। अभिभावक अपनी जिम्मेदारी का पूर्ण निवर्हन करने से बचते नजर आ रहे हैं। यहाँ पर शोधार्थी ने अपने विवेक से स्पष्ट किया है कि अभिभावक बच्चों का दर्पण होते है। यदि समाज संस्कृति युक्त है तो निश्चत ही उसका भविष्य भी संस्कार युक्त होगा ऐसा मेरा विचारार्थ है। संस्कार की उत्पत्ति परिवार से उत्पन्न होती है और आगे अनवरत् रूप में चलती रहती है।

नई शिक्षा नीति 2020 अब पूर्व की शिक्षा नीति 1986 का स्थान ग्रहण कर लिया है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा ढाँचागत परिर्वतन प्रस्तावित है। इस में 5+3+3+4 के स्टेक्चर को अपनाने की बात की गई। अब शिक्षा में डिजिटल शिक्षा प्रणाली को बढावा देने की संकल्पना है जिससे 21 वीं सदी एक तकनीकी की सदी सावित होगी।

साहित्य की समीक्षा

इसके अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो इस अध्ययन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अर्न्तनिहित है। इसमें नई शिक्षा नीति 2020 के विशेष रूप से प्राथमिक एवं माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों व समाज के अध्ययनों को स्पष्ट से प्रभाव देखा जा सकता है।

पी.एस ऐथल और शुभ्राज्योत्सना ऐथल के अनुसार उनके शोध पत्र में, ''भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण इसके उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में।'' सिंह ओ.पी.राजेश और आर्य चंद्रिका के अनुसार उनके शोध पत्र में, ''नये प्रयोगों व परिवर्तनों से भारतीय शिक्षा विकास की ओर, नई शिक्षा नीति 2020 के प्राप्त निष्कर्ष से विद्यार्थियों एवं अभिभावकों एवं समाज को ईमानदारी पूर्ण शिक्षा की गुणवत्ता को ध्यान में रखकर अध्ययन पर

बल दिया गया। मीना एवं शर्मा मोनिका के अनुसार अपने शोध पत्र में, ''नये भारत की नीव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विश्लेषण के उपरान्त पाया गया है। यह शिक्षा नीति समन्वयवादी है जो कि तकनीकी और परमपरागत शिक्षा के बीच सहसंबंध स्पष्ट कर रही है और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की बात की गई है। भारतीय शिक्षा नीति 2020 की गुणवत्ता आकर्षण संदर्भ सामर्थ में सुधार के लिये नवीन नीतियाँ बनाकर और निजी क्षेत्र के उच्च शिक्षा में नवीनता लाकर तकनीकी के माध्यम से सब तक पहुँचाने की कल्पना की गयी ह व आशा की जाती है कि छात्र और अभिभावक पूर्ण निष्ठा के साथ अपने दायित्व का निवर्हन करें।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों व समाज की भूमिका पर प्रमुखता से प्रकाश डाला गया है, परन्तु नई शिक्षा नीति (2020) से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक दत्त का विश्लेषण करना है। इसके अन्य प्रमुख उद्देश्य निम्नवत हैः

1. नई शिक्षा नीति (2020) के माध्यम विद्यार्थियों में सर्वांगींण विकास करना।
2. नई शिक्षा नीति (2020) के माध्यम से अभिभावकों में दूरदर्शिता का विकास करना।
3. नई शिक्षा नीति (2020) ने बदलते समाज का विमर्श किया और समन्वय करते हुये विकास करना।
4. भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण गुणवत्ता के कारण सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि और विकास करना।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) का शैक्षिक खर्च सकल उत्पाद में 4 प्रतिशत से बढाकर 6 प्रतिशत करने का सुझाव है।

अनुसंधान की क्रिया विधि

इस अध्ययन में पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक, मूल्यांकन का वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यानात्मक प्राविधि का उपयोग करते हुये प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से (NEP2020) का विद्यार्थी व अभिभावक एवं समाज की भूमिका के सन्दर्भ के साथ एक महत्वपूर्ण दृष्टि के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 के संपूर्ण आलेख का विश्लेषण किया गया है।

प्रदत्त संकलन

शोध अध्ययन में द्वितीयक श्रोत से प्रदत्तों का संकलन किया गया है जिसके आधार पर सम्पूर्ण आलेख का विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय स्त्रोत के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 का मूल अभिलेख का अध्ययन किया गया है जो भारत सरकार द्वारा अनुमोदित है।

द्वितीयक श्रोत

द्वितीय स्त्रोत के लिये शोधार्थी ने नई शिक्षा नीति (2020) से सम्बन्धित शोध पत्र, पुस्तकें, शोध रिपोर्ट, शोध प्रबन्ध, न्यूज पेपर, पत्रिका, विकिपीड़िया, ब्रिटानिका, आदि अन्य शैक्षिक संसाधन आदि।

अध्ययन का सद्प्रयोग

मौलिक तथ्यों पर आधारित इस अध्ययन का विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि समाज में एक नवीन शिक्षा नीति दिशा प्रदान करेंगी। इस अध्ययन की आवश्यकता का मुख्य कारण पूर्व में हुये शोध में इस समस्या का अभाव महसूस किया गया। इस लिये इस शोध की उपयोगिता समझकर अध्ययन किया गया। वर्तमान शोध नई शिक्षा नीति (2020) के बारे में पाठकों के बीच जागरूकता उत्पन्न कर सके और इस सन्दर्भ में पाठ्य सामग्री तैयार करके अग्रिम भविष्य में नये आयाम विकसित करने का प्रयास किया गया जिससे विद्यार्थियों को नवाचारमय शिक्षा की अनुमति की जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)

समाज की जरूरतों को समझते हुये इस ड्राफ्ट भावी विद्यार्थियों के लिये कौशल युक्त शिक्षा की कल्पनानिर्हित है। डॉ. राधाकृष्णन के विचार से मेल खाती हुई दिख रही है। इस शिक्षा में नगरीय व ग्रामीण अंचल तथा प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय परक शिक्षा की कल्पना की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य 2021 तक देश में पूर्व प्रचलित शिक्षा प्रणाली में परिमार्जित रूप देना है। नई शिक्षा को विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक प्रणाली में औपचारिक परिवर्तन के उद्देश्य से पेंश किया गया है।

अतः नई शिक्षा नीति (2020) आशाओं और अपेक्षा से परिपूर्ण हैं। यहॉ तक इस नीति में विदेश के नामी विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर स्थापित करने की बात कही गयी है। यह एक उत्तम प्रकार की पहल है। इससे विद्यार्थियों को अपने देश की समुन्नत शिक्षा का अध्ययन करने का अनुभव प्राप्त होगा।

मल्टीपल च्वाईस के माध्यम शिक्षार्थियों में कला संकाय के विषयों में भी रूचि पुनः जाग्रत होगी।

नई शिक्षा नीति (2020) में समाज की भूमिका

वर्ष 2030 तक इस नीति को पूर्ण रूप से लागू करने की आशा की गई है। उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। नई शिक्षा नीति में सीखने के लिये पुस्तकों का बोझ बढ़ाये जाने के बजाय व्यवहारिक शिक्षा और समाज में उपयोगी होगी शिक्षा देने की बात की गयी है। शिक्षा के संबंध में गांधी जी का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि 'मनुष्य की अंतनिर्हित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है'। जरूरी हो जाता है कि पूर्ववर्ती शिक्षा नीति में परिवर्तन कर उसे किसी प्रकार एक नवीन बदलाव के रूप में रखा जाए।

सबसे अहम् बात बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता थी। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता में सुधार, नवाचार और अनुसंधान की नई तकनीकियों को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति आवश्यकता थी। भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुँच सुनिश्ति करने के लिये शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिये शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता थी।

नई शिक्षा नीति (2020) नवाचार से युक्तः– नई शिक्षा नीति नवाचार से परिपूर्ण दिख रही है और उसका उपयोग भावी भविष्य की नवीन पीढ़ी पर असर स्पष्ट रूप से भविष्य में सार्थक सिद्ध होगा और देश इस तकनीकी का उपयोग कर विश्व स्तर के मंच पर अपना स्थान स्थापित कर पायेगा।

निष्कर्ष

हमारे अपने अनुभव में ऐसा पाया कि विभिन्न देशों ने अपनी परम्पराओं व संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुये समय समय पर अपनी शिक्षा नीति में सुधार किया या बदलाव किया और साथ में कई बार ऐसा हुआ शिक्षा नीति को ही बदल दिया जाता है। इसी प्रकार भारत में भी मौजूदा समय के साथ चलने के लिये भारतवासियों को नई शिक्षा नीति 2020 प्रदान की गई है जिसमें अनेक सुधार के साथ–साथ कुछ कमियाँ भी हो सकती है परन्तु इस सबके उपरान्त यह सन्तुलित है और देश को भविष्य की ऊँचाइयों पर ले जाने का कार्य करेगी। इस नई शिक्षा नीति में तकनीकी के साथ जो गठजोड़ किया है वो आगामी पीढ़ी के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी और आज तक शिक्षा के अधिकार में बच्चों की उम्र (6–14) वर्ष थी जो अब नई शिक्षा नीति में उसे (3–18) वर्ष कर दी है। इसके सकारात्मक परिणाम लंबे समय तक भारत को मजबूती प्रदान करने में सहायक होंगे और विकास की तरफ अग्रसर रखेंगे।

अतः हम इस बात को हृदयागंम होकर कहे सकते हैं कि यह शिक्षा नीति क्रान्तिकारी बदलाव और विकास में सहायक होगी।

सन्दर्भ सूची

1. (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार पृ.2 –10
2. रावत, अरविन्दु (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) समतामूलक और समावेशी शिक्षा क्रियान्वयन में अध्यापक शिक्षा की चुनौतियॉ, *अमोघवार्ता जर्नल,* अदिति प्रकाशन, रायपुर छत्तीसढ़ अंक 3 दिसम्बर – फरवरी पृ. 60–62
3. धोत्रे, संजय (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, *योजना पत्रिका,* सूचना भवन प्रकाशन नई दिल्ली, अंक सितम्बर।
4. (2021), नई शिक्षा नीति में प्रौद्योगिकी पर जोरए नई दुनिया समाचार पत्र, इंदौर प्रकाशन, दिसंबर पृ. 5–8।
5. कुमार, राजीव, (2022) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) और उच्च शिक्षा, *शोध समागम,* (ऑन लाइन) अदिति प्रकाशन रायपुर छत्तीसगढ़, ISSN 2581-6918 Vol. 05 Issue -03 जुलाई से सितम्बर 2002 पृ. 860–865।
6. शहीद, असलम एवं शुक्ला, प्रतिमा (2022), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियों और अवसरों पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च इन साइंस कम्युनिकेशन एण्ड टेक्नोलोजी ISSN (Online) 2581-9429 Vol. 2, Issue 1 - NOV 2022।
7. मीना एवं शर्मा, मोनिका (2021) नए भारत की नींव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), *हंस शोध सुधा,* Vol. 1 Issue 3. PP 59-62।

––==00==––